



SRIJANSHODH2026-60

भारतीय सांस्कृतिक विरासत एवं कला के अंकिय संरक्षण में प्रयोगधर्मी प्रवृत्तियों का योगदान

कु० नगमा सलमानी

शोध छात्रा (चित्रकला विभाग), रघुनाथ गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, मेरठ

डॉ. नाज़िमा इरफान

असिस्टेंट प्रोफेसर एवं शोध निर्देशिका, (चित्रकला विभाग)

रघुनाथ गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, मेरठ

शोध-सार:-

इक्कीसवीं सदी के इस दौर में प्रौद्योगिकी के उत्कर्ष युग में भारत की पारंपरिक कला और सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण एक गंभीर चुनौती बनकर सामने आया है। सांसारिक कलाकृतियां समय के प्रभाव, मानवीय उपेक्षा एवं पर्यावरणीय कारकों के कारण सतत हासोन्मुख है। प्रस्तुत शोध-पत्र के अंतर्गत इसी संकटमय पृष्ठभूमि के अंतर्गत अंकिय संरक्षण की विधि और उसमें समकालीन प्रयोगधर्मी प्रवृत्तियों के योगदान से संरक्षित कला पर व्यापक मूल्यांकन करता है, साथ ही भारत की प्राचीन कला निधि जो समय के साथ नष्ट होने लगी है उसे हम किस प्रकार से अंकिय या 'डिजिटल टूल्स' के माध्यम से पुनः रचित करके सुरक्षित रख सकते हैं पर विचार किया जाएगा। वर्तमान समय की कला ने विभिन्न आधुनिक माध्यमों को अपना कर कला के प्राचीन रूप को पूरी तरह बदल दिया है, जहां कला भित्तियों, कैनवासों, कागजों एवं पोथियों पर देखने के लिए मिलती थी, वहीं अब कला पूरी तरह कृत्रिम होकर कंप्यूटर, आभासी वास्तविकता के रूप में अभिव्यक्त की जा रही है। इस शोध के अंतर्गत विभिन्न विधाओं, दार्शनिक सौंदर्य शास्त्री एवं तकनीकी पक्षों के साथ आने वाले नए मार्गों की चुनौतियों का आलोचनात्मक विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द- अंकिय संरक्षण, प्राचीन कला, न्यू मीडिया, सांस्कृतिक विरासत, समकालीन कला एवं कलाकार, कला का लोकतंत्रीकरण एवं प्रयोगधर्मी प्रवृत्तियां।

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र की धरोहर उस देश की सांस्कृतिक विरासत, समाज की ऐतिहासिक यात्रा, ललित कलाएं, आंतरिक



अस्मिता एवं मानसिक चेतना की जीवंत अभिव्यक्ति होती है। ऐसा ही श्रेष्ठ इतिहास भारत का भी है, जहां कला का निर्माण केवल मनोरंजन एवं आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु नहीं बल्कि, भाव अभिव्यक्ति एवं सौंदर्यपरक दृष्टिकोण को सहेजने के लिए किया गया। प्रागैतिहासिक काल से आधुनिक काल तक के मानव समाज द्वारा कला के विभिन्न स्वरूपों की खोज का चरण विकसित किया गया। प्रागैतिहासिक काल के मानव के संघर्षपूर्ण जीवन को सौंदर्य पूर्ण रेखांकनों द्वारा देखा जा सकता है जहां अपने भावों को अभिव्यक्त करने के लिए कलाकारों ने न केवल साधारण माध्यम का प्रयोग किया बल्कि नए युग के साथ नई खोजों द्वारा आधुनिक माध्यमों का प्रयोग करके प्राचीन काल की कला को आधुनिक उपकरणों द्वारा संरक्षित किया।

आधुनिक उपकरणों की खोज एवं कला संरक्षण ने कला प्रेमियों को प्रोत्साहित किया। आधुनिक काल के आगमन ने न केवल प्राचीन कला को संरक्षण दिया बल्कि कलाकारों ने कला के स्वरूप को बदलकर उसे निखार कर नया जीवंत रूप, अपनी कल्पनाओं एवं अभिव्यक्ति से दिया। भौतिक धरातल पर निर्मित की गई कलाकृतियां चाहे वह कागज पर बनाई गई हो, चाहे कपड़े पर लकड़ी पर या दीवारों पर कुछ प्राकृतिक कारकों जैसे प्रकाश, तापमान, कवक, नमी, युद्ध एवं प्राकृतिक आपदाओं के कारण नष्ट हो जाती हैं। अत्यंत प्राचीन चित्रों के रंग समय के साथ धुंधले पड़ जाते हैं, कैनवस जर्जर हो जाते हैं और ऐसी संकट पूर्ण स्थिति में समकालीन युग में सूचना प्रौद्योगिकी के नए विकास में "अंकीय संरक्षण" केवल एक तकनीकी खोज या विकल्प नहीं है, बल्कि कला को संरक्षित करने एवं उसके अस्तित्व की रक्षा करने का एक माध्यम है

वर्तमान युग में अंकीय संरक्षण से तात्पर्य केवल चित्रों के साधारण तस्वीर निकालकर कंप्यूटर में संरक्षित कर लेना मात्र नहीं है, आज के कलाकार पारंपरिक कला एवं आधुनिक तकनीकी रूपों को परस्पर मिलाकर प्रयोग कर रहे हैं।

ऐतिहासिक कला से आधुनिक कला एवं अंकीय कला का विकास-क्रम

ऐतिहासिक कला से आधुनिक कला एवं अंकीय कला तक का सफर मानव का क्रमिक विकास एवं उसकी रचनात्मकता को दर्शाता है। बीसवीं सदी का उत्तरार्ध और इक्कीसवीं सदी के प्रारंभ काल के इतिहास में अभूतपूर्व माध्यमों के संक्रमण का युग रहा है। आधुनिक युग ने एक और तो पारंपरिक सौंदर्य के नियमों को चुनौती देकर कैनवस जैसे नए वैचारिक प्रयोग किये, वहीं अंकीय कला ने कैनवस जैसे भौतिक स्वरूपों को बदलकर एक अनंत आभासी धरातल प्रदान किया है।

पुरातन माध्यमों की सीमाएं एवं अंकीय धरातल का उद्भव

प्राचीन चित्रकला के निर्माण हेतु पुरातन माध्यमों जैसे- जल रंग, टेपरा रंग, एक्रिलिक रंग एवं तेल रंग जैसी विधाओं का प्रयोग किया जाता है। समय के साथ रंगों का ऑक्सीकरण होने के कारण रंग अपनी चमक खो देते हैं। कागज मोल्ड एवं कैनवस नमी के कारण सड़ने लगते हैं। इसके विपरीत आधुनिक अंकीय कला ने कलाकारों को एक कभी ना नष्ट होने वाला धरातल दिया है। अंकीय कला एवं कंप्यूटर कला में प्रयुक्त होने वाले ऐसे सॉफ्टवेयर का निर्माण किया गया है, जो एक कलाकार को वैसे ही ब्रश स्ट्रोक लेयरिंग एवं टेक्सचर की सुविधा प्रदान करते हैं, जो की प्राचीन चित्रकार को कैनवास पर प्राप्त थी। और इसमें रंगों के क्षरण होने का कोई भय भी नहीं है।

समकालीन कला का वैचारिक क्षितिज एवं नवीन आयाम

नूतन काल ने कई आधुनिक विचारों को प्रधानता दी। जब हम डाली के अति-यथार्थवाद या अमूर्त-अभिव्यक्तिवाद एवं पिकासो के घनवाद को देखते हैं तो समझ पाते हैं, कि कला ने समाज में चल रही मानसिक द्वंद एवं उथल-पुथल को इन्हीं आंदोलन के माध्यम से अभिव्यक्त किया। इन नए वैचारिक आंदोलन ने ही अंकीय कला के माध्यम हेतु एक नया आयाम तैयार किया। अंकीय कलाकार अब एक स्थिर चित्र निर्मित नहीं करते, बल्कि वे अंकीय माध्यमों की सहायता से चित्रों में ध्वनि, समय के तत्वों एवं गति को भी दर्शाते हैं। इन वैचारिक आंदोलन के माध्यम से कला समाज के अधिक करीब हो गई क्योंकि आज का युग दृश्यात्मक गतिशीलता एवं सामाजिक सूचनाओं का केंद्र बन चुका है।

अंकीय संरक्षण के क्षेत्र में समकालीन तकनीकी प्रयोग और आधुनिक प्रवृत्तियां

समकालीन प्रयोगों ने कला के इतिहास और कलाकृतियों के संरक्षण में एक नई क्रांति ला दी है। इन तकनीकों का प्रयोग ललित कलाओं के क्षेत्र के अंतर्गत महत्वपूर्ण रूप से किया जा रहा है।

त्रिआयामी स्कैनिंग के माध्यम से धरातलीय खुरदरेपन का मानचित्रण

सदियों पुरानी प्राचीन कलाकृतियों की प्रतिकृतियां तैयार करना हमेशा से ही एक कठिन चुनौती पूर्ण कार्य रहा है। परंतु आधुनिक युग में तकनीक के अविष्कारी युग ने इस जटिल कार्य को संभव कर दिया है। जिसमें फोटोग्राफी और त्रिआयामी स्कैनिंग के उपयोग से नए प्रयोग किया जा रहे हैं, जिस प्रकार प्राचीन युग में किसी भौतिक धरातल पर एक श्रेष्ठ कलाकृति का निर्माण बड़ी बारीकी से निर्मित किया जाता था, उसी प्रकार इन तकनीकी धरातलों एवं उपकरणों के माध्यम से एक वास्तविक रूप में आभासी कलाकृति का निर्माण किया जा सकता है। इस तकनीक का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा है, क्योंकि अंकीय धरातल पर तैयार की गई कलाकृतियां केवल संग्रहालय या कुछ अभिजात वर्ग तक ही सीमित नहीं रहती बल्कि इन्हें संपूर्ण विश्व स्तर पर आम जन द्वारा भी आसानी से देखा जा

सकता है

कला के प्रचार-प्रसार एवं विपणन के अंकीय प्लेटफार्म की भूमिका

समकालीन युग में अंकीय क्रांति ने कला के स्वरूप को पूरी तरह परिवर्तित कर दिया है। इस परिवर्तन ने कला के प्रदर्शन एवं व्यापार के तरीकों को एक व्यापक प्लेटफॉर्म तैयार करके दिया है। आज के दौर में सोशल मीडिया एक बहुत बड़ा केंद्र बन चुका है, जहां लोग एक दूसरे से विश्व स्तर पर जुड़ सकते हैं। इसी आधार पर इंस्टाग्राम, यूट्यूब एवं फेसबुक जैसे सोशल मीडिया मंच आज के दौर में न केवल मनोरंजन का साधन बने हुए हैं, बल्कि एक कलाकार के लिए और कला प्रेमियों के लिए वैश्विक मंच तैयार कर रहे हैं। जहां पर कलाकार अपनी कलाकृतियों का आसानी से प्रदर्शन कर सकता है। आज की तकनीकी युग में कला केवल चुनिंदा प्रदर्शनीयों तक सीमित नहीं रही है, बल्कि अपनी कलाकृतियों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए कई नए और सुलभ माध्यम तैयार हो चुके हैं।

वर्तमान में ऑनलाइन वेबीनार एवं रचनात्मक वर्कशॉप के माध्यम से दूर दराज के कला प्रेमियों को भी घर बैठे ही कला की गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा और व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त हो रहा है। इसके साथ ही आभासी पटल पर कलाकृतियों का ई-विपणन (बिक्री) भी आज एक अत्यंत सशक्त माध्यम बन चुका है। इस नवीन व्यवस्था के अंतर्गत अब कोई भी श्री सृजक बिना किसी बाधा के अपनी कलाकृतियों को सीधे वैश्विक स्तर पर प्रदर्शित कर सकता है। यह पारदर्शी प्रक्रिया सुदूर बैठे कलाकारों और खरीदारों तक सीधी पहुंच स्थापित करती है एवं क्रय-विक्रय को अत्यंत सुगम बनाती है।

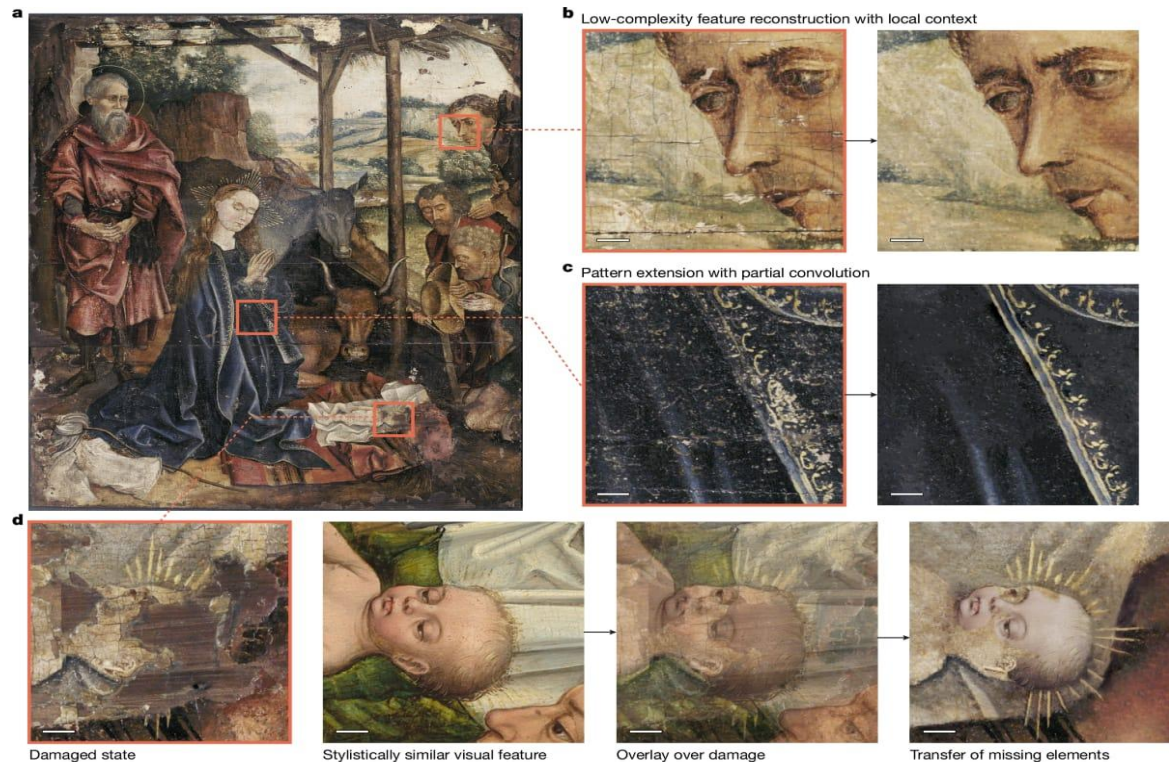
'हाइपर स्पेक्ट्रल इमेजरी तकनीक' एवं पदार्थ के मूल वर्णों का अन्वेषण

'हाइपर स्पेक्ट्रल इमेजरी' एक ऐसी तकनीक है, जो 'इलेक्ट्रोमैग्नेटिक स्पेक्ट्रम' के सैकड़ों संकीर्ण बैंडों डेटा एकत्रित करके विस्तृत 'स्पेक्ट्रल सिग्नेचर' तैयार करती है। यह इतनी उन्नत तकनीक है, कि जहां एक और मानवीय आंखें केवल प्राकृतिक प्रमुख रंगों जैसे-नीला, हरा एवं लाल आदि को ही देख सकती है। वही यह श्रेष्ठ तकनीक उन सभी रंगों के अतिरिक्त भी अन्य अदृश्य तरंग धैर्य को भी देखकर स्कैन कर लेती है।

कई बार चित्रों पर एक अकुशल सुधारों के द्वारा किए गए, कार्य मूल चित्रकार से अतिरिक्त अन्य कारीगर के द्वारा किया गया कार्य या चित्र के पुराने होने के कारण उसे पर जमी धूल, कालीख एवं कुछ दुष्ट प्रकरण छप जाते हैं। जिसमें यह हाइपरस्पेक्ट्रल इमेजरी तकनीक बहुत ही प्रमुख भूमिका निभाती है। अपनी प्रमुखता के कारण यह विभिन्न तरंग धैर्य का उपयोग करके चित्र की सभी परतों के आर-पार देखकर उसके शुद्ध स्वरूप को पुनर्जीवित कर देती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं मशीन लर्निंग द्वारा ऐतिहासिक जीर्णोद्धार

वर्तमान समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं 'मशीन लर्निंग' अपनी उन्नत तकनीकी के कारण ऊंचाइयों की ओर उड़ान बढ़ा रही है। इन उन्नत तकनीकों ने ऐतिहासिक धरोहर के संरक्षण में एक क्रांति से ला दी है। इन तकनीकों का प्रयोग करके किसी भी प्रकार की प्राचीन से प्राचीन कलाकृतियां तस्वीर पांडुलिपि चित्र आदि का जीर्णोद्धार करके पुनः जीवित किया जा सकता है, अर्थात् उन सभी को विशुद्ध तरीके से सुंदर और संरक्षित किया जा सकता है। यदि कोई चित्र जो हजारों वर्ष पूर्व पहले चित्रित किया गया हो, किसी नमी के कारण या किसी असावधानी के कारण नष्ट हो गया हो, तो उसे इस तकनीक के द्वारा पुनः तैयार किया जा सकता है। यह तकनीक इतनी उन्नत है, कि इसके द्वारा तैयार किए गए चित्र को देखकर ऐसा लगता है, मानो किसी श्रेष्ठ चित्रकार के द्वारा किया गया कार्य हो।



कलाकार-मास्टर ऑफ द प्राडो एडोर्शन

माध्यम-ऑयल ओन पैनेल (15वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध)

Nature Journal: Physical restoration of a painting with a digitally constructed mask

समकालीन कला स्वरूप में अंकित कला एवं सृजनशीलता की आधुनिकता

पारंपरिक कलाओं का स्वरूप वर्तमान समय में पूरी तरह बदल चुका है वर्तमान में कलाकार नए माध्यमों का प्रयोग करके भावों को अभिव्यक्त कर कला को नया रूप दे रहे हैं। आज की कला केवल प्राचीन चित्रकला की केवल प्रतिकृति नहीं रह गई है, बल्कि आज के कलाकारों की नई सोच का नया युग बन चुकी है

सृजनात्मक अंकीय माध्यम उभरते आयाम एवं नव प्रयोग

आधुनिक युग में अंकिय तकनीक ने प्राचीन रूढ़ियों को तोड़कर रचनात्मक क्रांति का सूत्र बंद किया है। वर्तमान कलाकार अब प्राचीन माध्यमों तक सीमित ना रहकर अब आवासीय त्रिविमीय संसार और कृत्रिम प्रयोग धर्मिता से नए तत्वों को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बना रहे हैं। नए माध्यमों के रूप में कलाकारों द्वारा कंप्यूटर या अंकिय माध्यमों का चुनाव किया गया है। जैसे जेनरेटिव आर्ट एक ऐसी विधाओं में से एक है, जहां कलाकार स्वचालित प्रणाली निर्मित करते हैं।

सारणी: पारंपरिक कला बनाम समकालीन डिजिटल कला का तुलनात्मक विश्लेषण

रचनात्मक पैरामीटर (क्रिएटिव मानदंड)	पारंपरिक कलात्मक दृष्टिकोण	अत्याधुनिक डिजिटल स्वरूप	सामाजिक व व्यावहारिक रूपांतरण
1. सृजन का आधार और माध्यम	भौतिक कैनवास, कागज, मिट्टी, पत्थर और हस्तनिर्मित उपकरण जैसे ब्रश और छेनी।	डिजिटल टैबलेट, स्टाइलस पेन, ग्राफिक्स सॉफ्टवेयर, कोडिंग और पिक्सेल-आधारित स्क्रीन।	कला अब भौतिक सीमाओं से मुक्त होकर असीमित रीटेक (Undo) और सहज सुधार की सुविधा देती है।
2. वर्ण संयोजन और रंग टोन	प्राकृतिक या रासायनिक रंग (ऑयल, एक्रेलिक, वॉटरकलर) जिन्हें मिलाकर नए शेड्स बनाए जाते हैं।	RGB डिजिटल पिक्सल्स, स्क्रीन लाइट्स और करोड़ों रंगों के सटीक रेडीमेड पैलेट्स।	रंग कभी फीके नहीं पड़ते और स्क्रीन की चमक के कारण दर्शकों को एक नया दृश्य आकर्षण मिलता है।
3. कला का विस्तार और प्रदर्शन मंच	भौतिक कला दीर्घाएं (आर्ट गैलरी), संग्रहालय और प्रदर्शनियां जहाँ दर्शकों को स्वयं जाना पड़ता है।	इंटरनेट, सोशल मीडिया, वर्चुअल गैलरी और ब्लॉकचेन आधारित डिजिटल प्लेटफॉर्म।	कला का लोकतान्त्रिकीकरण हुआ है; दुनिया के किसी भी कोने से कोई भी व्यक्ति एक क्लिक पर इसे देख सकता है।
4. दर्शक जुड़ाव और संवेदी अनुभव	दर्शक कला को केवल सामने से देख सकते हैं या उसकी बनावट को छूकर महसूस कर सकते हैं।	इंटरैक्टिव डिस्प्ले, वर्चुअल रियलिटी (VR) हेडसेट्स और 3D तकनीक, जहाँ दर्शक कला का हिस्सा बन जाता है।	उपभोक्ता का अनुभव निष्क्रिय दर्शक से बदलकर एक सक्रिय भागीदार जैसा हो गया है, जो कला को लाइव महसूस करता है।

इस क्रांति ने प्रयोगधर्मिता वाले कलाकारों के लोकतांत्रिक कारण का मार्ग प्रशस्त कर दिया है। जिसने भौतिक कलाओं की भौगोलिक सीमाएं पूर्णता समाप्त कर दी है। स्क्रीन की दीप्ति, प्रकाश की तरंगों और अमूर्त डाटा के मिश्रण से बने यह नई विधाएं मानव की चेतना के परे एक अनूठे सौंदर्य का निर्माण कर उनसे परिचित करा रही है।

भारतीय कला जगत में अंकिय नवोन्मेष एवं स्वदेशी सृजनशीलता

भारत की प्राचीन कला एवं संस्कृति के परिवेश में अंकिय कला का आगमन एक तकनीकी बदलाव नहीं, बल्कि सदियों से चली आ रही पुरानी विरासत का आधुनिकीकरण है। कला के क्षेत्र में यह एक ऐसा बदलाव है, जहां कलाकार को किसी भी तरह से प्राचीन कला की प्रतिकृति तैयार करने की आवश्यकता नहीं है, और ना ही कुछ अलग तरह से उसे प्रस्तुत करने की आवश्यकता है, बल्कि इस बदलाव ने तो उसे कला का एक नया रूप दिया है। इसमें भारतीय अंकिय कलाकार अपने जड़ों से जुड़कर भी लोककलाओं एवं ऐतिहासिक प्रसंगों को आसानी से आधुनिक सॉफ्टवेयर एवं त्रिआयामी प्रभाव में प्रस्तुत कर सकते हैं। भारत के अंकिय कलाकार प्राचीन कला को संरक्षित कर उसे नया स्वरूप में ढाल रहे हैं। वह राजा रवि वर्मा के चित्रों की भव्यता एवं अजंता की गुफाओं की चित्रकला को आधुनिक धरातल के माध्यम से अनूठे सौंदर्यशास्त्र में बदल रहे हैं।

कला का अंकिय संरक्षण एवं आधुनिक सामाजिक चेतना में कलात्मक योगदान

जब कोई तकनीक समाज के विकास में योगदान देती है, तो उसका महत्व और अधिक बढ़ जाता है। इसी प्रकार जब कोई अंकिय तकनीक ऐतिहासिक पेंटिंग का संरक्षण करती है, तो वह समाज की सामूहिक स्मृति की भी रक्षा करती है। उदाहरण के लिए प्राचीन गुफा मंदिरों में नष्ट हो चुके चित्रों एवं मूर्तियों को अंकिय तकनीक द्वारा आभासी स्वरूप में पुनः जीवित कर दिया जाता है। यह ऐतिहासिक चेतन की भावनाओं और राष्ट्र के गौरव को सुदृढ़ करती है। आज का सामाजिक मानव जब तकनीकी एकाकीपन तीव्र महानगरीय एवं सांस्कृतिक विस्मृति के संकट से जूझ रहा है। तब इन्हीं अंकिय अभिलेखागारों ने हमारे ऐतिहासिक और कलात्मक धरोहरों को आश्रय प्रदान किया।

निष्कर्ष

प्रस्तुत कथन के विश्लेषणात्मक अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है, कि संस्कृत विरासत एवं कला के अंकिय संरक्षण में वर्तमान समकालीन प्रयोगधर्मिता यह केवल एक तकनीकी विलास या यांत्रिकी प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह वर्तमान को भविष्य से जोड़ती है। यह प्राची पारंपरिक रेखांकन और चित्रकला एवं आधुनिक माध्यमों को कला के साथ जोड़कर एक संगम तैयार करती है, जो कि कला के इतिहास में एक नए स्वर्ण युग का सूत्रपात करता है। वर्तमान कलाकारों ने इन्हीं प्रयोग धर्मिताओं का प्रयोग करके यह सिद्ध कर दिया है, कि किसी



भी प्रकार की कला मृत नहीं होती, बल्कि उसे पुनर्जीवित किया जा सकता है। इन्होंने यह सिद्ध कर दिया है, कि किस प्रकार से तकनीकी नवाचारों का प्रयोग करके ऐतिहासिक कृतियों को भौतिक विनाश से बचकर उन्हें अमर किया जा सकता है। और किस प्रकार से कला केवल कुलीन वर्ग के लिए नहीं है, बल्कि यह है हर कला प्रेमी के लिए स्वतंत्र है।

भविष्य में जैसे-जैसे इन तकनीकी नवाचारों का प्रयोग एवं नए अन्वेषण होते रहेंगे, वैसे-वैसे कला के लिए यह एक नया रूप प्रस्तुत करता रहेगा। एक शोधार्थी और रचनाकार के लिए वर्तमान समय की मांग है, कि हम इन तकनीकी माध्यमों को पूरी तरह से अपनाये ताकि यह अतीत की कलात्मक विरासतों को पूर्ण तरह जीवन करने में मददगार हासिल रहे और साथ ही आने वाली पीढ़ियों के लिए भी सुरक्षित रहे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- बेजामिन, डब्ल्यू, (1935), *द वर्क ऑफ आर्ट इन द एज ऑफ मैकेनिकल रिप्रोडक्शन*, पेंग्विन बुक्स।
- कैमरून, एफ., एवं केंडरडाइन, एस. (संपादक) (2007), *थ्योराइजिंग डिजिटल कल्चरल हेरिटेज: ए क्रिटिकल डिस्कोर्स*. एमआईटी प्रेस।
- Chen, T., & Sharma, P., (2025), AI-driven restoration of damaged wall paintings and historical canvases: A contemporary approach. *Journal of Cultural Computing and Heritage*, 18(2), 112-128.
- Gupta, S., (2018), Digital preservation of Indian cultural heritage: Challenges and opportunities. *Journal of Heritage Studies*, 12(2), 145-158.
- Kumar, A., (2024), *Indian folk arts in the 21st century: Digital subversion and modern canvas*. Oxford University Press.
- Malik, R., & Sen, S., (2025), The screen as the new canvas: Aesthetics of born-digital painting and digital heritage preservation in India. *International Journal of Fine Arts Studies*, 31(1), 45-63.
- Prasad, S., (2023), Experimentation in contemporary art and the dynamics of the digital art market. *International Journal of All Research Education and Scientific Methods*, 9(2), 415-422.
- Sharma, V., (2026), *Digital interventions in drawing and painting: Conservation methods for 20th and 21st-century masterpieces*. Academic Press.
- यूनेस्को, (2003), *चार्टर ऑन द प्रिजर्वेशन ऑफ डिजिटल हेरिटेज*, यूनेस्को डिजिटल लाइब्रेरी।